Subject Political Science

Abdul Qaish

राज्य की उत्पत्ति का शक्ति सिद्धांत

राज्य की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांतों में शक्ति सिद्धांत का अपना महत्व है क्योंकि मानव इतिहास विभिन्न कालखण्डों में संघर्षों का इतिहास रहा है। इस सिद्धांत को राज्य का समाजशास्त्रीय सिद्धांत भी कहा जाता है। इसकी मूल मान्यता यह है कि राज्य की उत्पत्ति का कारण शक्ति है। इतिहास में सभी जगह यह देखने को मिलता है कि सबल या शक्तिशाली जन, गोल, समूह अथवा राष्ट्र निर्बल समूह को पराजित कर अपने में मिला लेते हैं। शक्ति के द्वारा एक शासक न केवल अपने राज्य को सुरक्षित रखता है बल्कि उसका विस्तार भी करता है। राज्य की उत्पत्ति से लेकर उसका अस्तित्व तक शक्ति पर निर्भर करता है। शक्ति सिद्धांत कोई नया या आधुनिक सिद्धांत नहीं है, प्राचीन यूनान में अनेक विद्वान किसी न किसी रूप में इस सिद्धांत को मानते थे जैसे सोफिस्ट थ्रेसीमैकस कहता था कि "न्याय शक्तिशाली का हित है।" इस उक्ति से यह निष्कर्ष निकलता है कि बलशाली अपने हित में जो कुछ करता है वह उचित है। Polybius तथा आधुनिक काल में मेकियावेली ने भी यह माना है कि राज्य के अस्तित्व का आधार शक्ति है।

19वीं तथा 20वीं शताब्दी में कई लेखकों तथा विद्वानों ने इस सिद्धांत का समर्थन किया है। उदाहरणार्थ- जर्मन लेखक गोमप्लाविज, राटसैनहोफर, ओपेनहाइमर तथा सिमेल, इंग्लैंड में जेंक्स तथा अमरीका में वार्ड तथा स्माल ने अपने-अपने दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या प्रस्तुत की है। यहाँ सभी विचारकों के विचारों का उल्लेख करना संभव नहीं है लेकिन संक्षेप में हम ओपेनहाइमर के विश्लेषण को प्रस्तुत करेंगे। ओपेनहाइमर ने अपनी पुस्तक The State में अपने विचारों का विस्तार से वर्णन किया है। उनका मानना है कि राज्य वह संगठन है जिसमें एक वर्ग अन्य वर्गों के ऊपर अपना आधिपत्य स्थापित करता है तथा ऐसे वर्ग संगठन का जन्म केवल युद्ध द्वारा एक समूह की दूसरे समूह के ऊपर विजय द्वारा सम्भव है। ओपेनहाइमर यह मानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के भीतर एक आर्थिक प्रेरणा निहित होती है। मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएं हैं भोजन, वस्त्र तथा मकान। ये आवश्यकताएं मनुष्यों

Scanned with CamScanner

के विकास का प्रमुख कारण है। प्रत्येक मनुष्य अपने तथा कुटुम्ब की इन्ही अपेक्षाओं को पूरा करने का प्रयत्न करता है। इन आवश्यकताओं की सन्तुष्टि दो प्रकार से सम्भव है - प्रथम कि मनुष्य स्वयं कार्य करके इन आवश्यकताओं को पूरा कर ले, दूसरा वह बल प्रयोग द्वारा दूसरे के श्रम से अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करले। जहां पहला तरीका श्रम का है वहीं दूसरा डाकेजनी या श्रम के अतिक्रमण का है। ओपेनहाइमर दो स्तरों पर इसका विश्लेषण प्रस्तुत करता है पहला - मानव समाज का कालखंड, दूसरा राज्य की उत्पत्ति की अवस्थाएं

(1) आदिम आखेटक एवं कृषिगत समाज :⇒ आदिम आखेटक समाज में राज्य की उत्पत्ति सम्भव नही थी क्योंकि उस समय आर्थिक संगठन इतना अधिक विकसित नही हो पाया था कि इससे उत्पादित वस्तुएं सबल समूह द्वारा बलपूर्वक छीन ली जाए। आदिम कृषिगत समाज व्यवस्था भी राजनैतिक नही थी क्योंकि कृषिगत समाज छोटे-छोटे ग्रामों में विभाजित था, प्रत्येक ग्राम का एक मुखिया था। यह अवस्था ऐसी नही थी कि कृषक युद्ध हेतु दूसरे पर आक्रमण के लिए अपना संगठन बनाते। कृषक भूमि से इतना बंधा हुआ था कि उसमे चलायमानता का अभाव था। इस अवस्था में भूमि की कोई कमी नही थी इसलिए भूमि हस्तगत करने के लिए युद्धों की कोई आवश्यकता नहीं थी। आदिम कृषिगत समाज में युद्ध की भावना का पूर्णतः अभाव था क्योंकि युद्ध से किसी प्रकार ~~की सम्भ~~ के लाभ की संभावना नही थी।

(2) आदिम पशुपालक समाज :⇒ इस अवस्था में राज्य संगठन के विभिन्न तत्व विद्यमान थे। यह एक ऐसी अवस्था जिसमे धनी तथा निर्धन वर्ग का जन्म हो गया था। कोई व्यक्ति धनी है या निर्धन इसका निर्धारण पशुओं की संख्या से होता था। यह सामाजिक स्तर को भी निर्धारित करता था। जहां आदिम आखेटक एवं कृषिगत समाज में दास प्रथा का अभाव था वहीं पशुपालक समाज मे दासता का महत्व बढ़ने लगा। अधिक दास होने पर अधिक पशुओं की देखभाल की जा सकती। पशुओं की बढ़ती संख्या ने नये चारागाहों की खोज को जन्म दिया। इस अवस्था में दास एवं भूमि

Scanned with CamScanner

की आवश्यकता ने युद्ध ~~को~~ एवं विस्तार को अवश्यंभावी बना दिया जिसके कारण राज्य जैसा संगठन अस्तित्व में आया जिसमे बलशाली वर्ग निर्बल वर्ग का शोषण करता था।

ओपेनहाइमर ने माना है कि राज्य की उत्पत्ति में छः अवस्थाएं देखने को मिलती हैं जो निम्नलिखित हैं।

प्रथम अवस्था:⇒ इस अवस्था में कृषको तथा आखेटकों का पशुपालकों से लगातार संघर्ष होते रहते थे। प्रथम दो वर्ग आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा करने में असमर्थ थे इसलिए इन्होने कालान्तर में विरोध करना छोड़ दिया।

द्वितीय अवस्था:⇒ इस अवस्था में आक्रमणकारी कृषक तथा आखेट वर्ग के प्राण तथा सम्पत्ति को नष्ट नहीं करते हैं बल्कि उसकी पैदवार मे से उसके खाने के लिए छोड़कर अतिरेक को उठा ले जाते हैं।

तृतीय अवस्था:⇒ इस अवस्था में कृषक स्वयं उनको अपने उपज का एक निश्चित भाग कर के रूप में देना स्वीकार कर लेता है, बदले में विजेता उनके प्राण तथा सम्पत्ति की रक्षा के लिए उत्तरदायी हो जाते हैं।

चौथी अवस्था:⇒ इस अवस्था में विजित तथा विजेता दोनों के मध्य नये संबंधों की सृष्टि होती है।

पाँचवी अवस्था:⇒ इस अवस्था में विजेता वर्ग विभिन्न ग्रामों के मध्य उत्पन्न होने वाले झगड़ों का पटाक्षेप करने के लिए प्रत्येक ग्राम में एक कर्मचारी नियुक्त कर देते हैं।

छठवी अवस्था:⇒ इस अवस्था में विजेता तथा विजित दोनों समूह मिलकर एक हो जाते हैं और विजेता समूह का नेता राजा कहलाने लगता है। इस प्रकार ओपेनहाइमर के मत में राज्य की उत्पत्ति हुई।

निष्कर्ष:⇒ निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि राज्य की उत्पत्ति, अस्तित्व तथा विकास में शक्ति की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है लेकिन राज्य की उत्पत्ति का यह अकेला कारक नहीं है, विभिन्न कारकों के समग्र योगदान से राज्य उदित, पुष्पित एवं ~~पल्~~ पल्लवित होता है केवल शक्ति पर आधारित राज्य चिरकाल तक अस्तित्वमान नहीं रह सकता।

Scanned with CamScanner